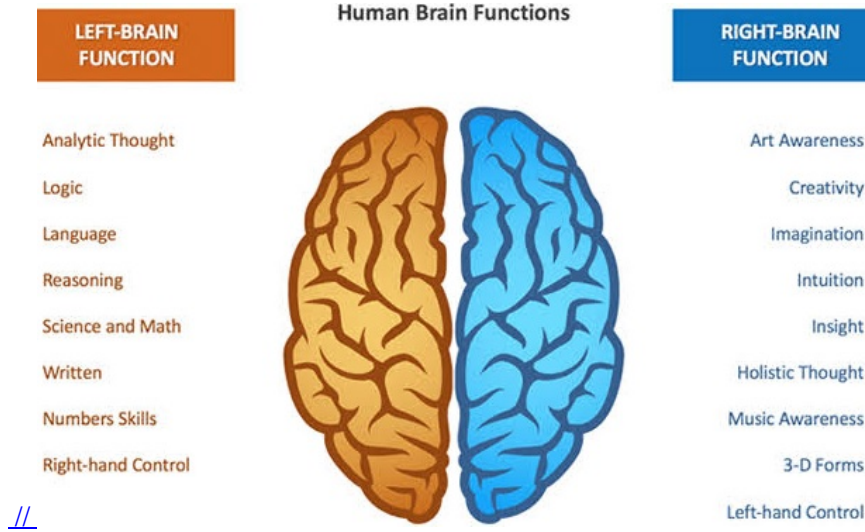


प्रलिमिंस फैक्ट्स: 14 सतिंबर, 2020

- [इंडियन ब्रेन टेम्पलेट्स](#)
- [हृदी दविस- 2020](#)
- [सगिापुर कनवेंशन ऑन मडिफिशन](#)
- [कृषणा-गोदावरी \(केजी\) बेसनि](#)

इंडियन ब्रेन टेम्पलेट्स Indian Brain Templates

‘राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और स्नायु वजिज्ञान संस्थान’ (National Institute of Mental Health and Neuro-Sciences- NIMHANS) के न्यूरोसाइंटिस्टों की एक टीम द्वारा वकिसति ‘इंडियन ब्रेन टेम्पलेट्स’ (Indian Brain Templates- IBT) और एक **मस्तषिक एटलस** का उपयोग करके जल्द ही भारत में न्यूरोलॉजिस्ट, न्यूरोसर्जन एवं मनोचकितिसक अपने मरीजों के मस्तषिक संरचना का मानचित्र बना सकते हैं और उसका सटीक आकलन कर सकते हैं।



प्रमुख बदि:

- न्यूरोसाइंटिस्ट्स ने भारतीय मरीजों के 500 से अधिक ब्रेन स्कैन का अध्ययन कया जनिमें भारतीय मस्तषिकों के पाँच सेट एवं पाँच वर्ष तक के बच्चों के लिये एक मस्तषिक एटलस (बचपन से वयस्कता) तक को कवर करने के लिये वकिसति कया है।
- ‘मॉन्ट्रयिल न्यूरोलॉजिकल इंडेक्स’ (Montreal Neurological Index-MNI) **टेम्पलेट** जसि वर्तमान में उपयोग कया जाता है वह **कॉकेशियन** दमिग (Caucasian Brains) पर आधारति है।

कॉकेशियन जाति (Caucasian Race):

- कॉकेशियन जाति, मानव जाति का एक पुराना वर्ग समूह है जो ऐतहासिक प्रजाति विर्गीकरण पर आधारति है।

- इस समूह में आमतौर पर यूरोप, पश्चिमी एशिया, मध्य एशिया, दक्षिण एशिया, उत्तरी अफ्रीका एवं हॉर्न ऑफ अफ्रीका की आबादी शामिल है।
- 18वीं शताब्दी में यूरोपीय विद्वानों का मानना था कि मानव प्रजाति का उद्गम कॉकेशस पर्वत क्षेत्र में हुआ था। इसी कॉकेशस पर्वत के नाम पर कॉकेशियन जाति का नामकरण किया गया।

‘राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और स्नायु विज्ञान संस्थान’ (NIMHANS):

- यह मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में मरीज़ देखभाल एवं अकादमिक खोज के लिये एक बहु-वैशेषिक संस्थान है।
- यह कर्नाटक के बंगलुरु में स्थित एक प्रमुख चिकित्सा संस्थान है।
- यह केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत स्वायत्त रूप से संचालित राष्ट्रीय महत्त्व का संस्थान है।
- एमएनआई टेम्पलेट (MNI Template) उत्तरी अमेरिका में शहरी आबादी के सरिफ एक छोटे से भाग के औसतन 152 स्वस्थ मस्तिष्क स्कैन द्वारा बनाया गया था।
- कति कॉकेशियन मस्तिष्क, एशियाई मस्तिष्क से अलग है। जबकि कुछ देशों में मस्तिष्क को मापने के लिये अपने-अपने पैमाने हैं और भारत अभी भी कॉकेशियन मस्तिष्क के टेम्पलेट पर निर्भर है।
- ‘इंडियन ब्रेन टेम्पलेट्स’ (IBT) और मस्तिष्क एटलस से संबंधित शोध को ‘ह्यूमन ब्रेन मैपिंग’ (Human Brain Mapping) पत्रिका में प्रकाशित किया गया था।

लाभ:

- ‘इंडियन ब्रेन टेम्पलेट्स’ एवं मस्तिष्क एटलस, स्ट्रोक, मस्तिष्क ट्यूमर एवं वकिष्पितता (Dementia) जैसे न्यूरोलॉजिकल विकारों वाले रोगियों का अधिक सटीक संदर्भित मानचित्र प्रदान करेंगे।
- ये टेम्पलेट एवं एटलस मानव मस्तिष्क एवं मनोवैज्ञानिक कार्यों के अध्ययन में संबंधित जानकारी को और अधिक उपयोगी बनाने में मदद करेंगे।
- इससे ‘अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर’ (Attention Deficit Hyperactivity Disorder- ADHD), आत्मकेंद्रित, पदार्थ निर्भरता, सज़ोफ़्रेनिया जैसी मनोरोग संबंधी बीमारियों के बारे में चिकित्सकों को समझने में आसानी होगी।

हंदी दिवस- 2020

Hindi Diwas- 2020

प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को देशभर में हंदी दिवस (Hindi Diwas) मनाया जाता है।



प्रमुख बंदि:

- भारत में 14 सितंबर, 1949 संविधान सभा ने भारत संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में हंदी भाषा को स्वीकृति दी जसै भारत के संविधान द्वारा अनुमोदित किया गया था जो 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ था।
 - भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत देवनागरी लिपि में लिखी गई हंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया गया।
- हालाँकि हंदी एवं अंगरेज़ी दोनों को आज़ादी के बाद भारत की भाषा के रूप में चुना गया और संविधान सभा ने देवनागरी लिपिवाली हंदी के साथ ही अंगरेज़ी को भी आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया कति वर्ष 1949 में 14 सितंबर के दिन संविधान सभा ने हंदी को ही भारत की राजभाषा घोषित किया।

- राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के आग्रह पर वर्ष 1953 से पूरे भारत में 14 सितंबर को **हंदी** दविस मनाया जाता है।
 - पहला हंदी दविस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था।
- हंदी वशिव में सबसे अधिक बोली जाने वाली पाँच भाषाओं में से एक है।
- उल्लेखनीय है कि प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को **वशिव हंदी दविस** मनाया जाता है।

सगिापुर कन्वेंशन ऑन मडिएशन

Singapore Convention on Mediation

12 सितंबर, 2020 को व्यापार करने में आसानी को बढ़ावा देने के लिये नपिटान ढाँचा जसिे **सगिापुर कन्वेंशन ऑन मडिएशन** (Singapore Convention on Mediation) भी कहा जाता है, लागू हो गया।



**SINGAPORE
CONVENTION
ON MEDIATION**

प्रमुख बढि:

यह भारत एवं विश्व के अन्य देशों जो इस अभिसमय पर हस्ताक्षरकर्त्ता देश हैं, में व्यवसायों से जुड़े कॉर्पोरेट विवादों की मध्यस्थता करने हेतु एक अधिक प्रभावी तरीका प्रदान करेगा।

इसे 'यूनाइटेड नेशंस कन्वेंशन ऑन इंटरनेशनल सेटलमेंट एग्रीमेंट रजिस्ट्रारि फ्रॉम मेडिएशन' (United Nations Convention on International Settlement Agreements Resulting from Mediation) के नाम से भी जाना जाता है। यह सगिापुर के नाम पर होने वाली संयुक्त राष्ट्र की पहली संधि भी है।

इस अभिसमय के तहत सामंजस्य एवं सरलीकृत प्रवर्तन ढाँचा समय एवं कानूनी लागतों में बचत को बढ़ावा देगा जो अनश्चितता के समय व्यवसायों के लिये महत्वपूर्ण है जैसे- वर्तमान COVID-19 महामारी के दौरान।

1 सितंबर, 2020 तक इस अभिसमय पर 53 हस्ताक्षरकर्त्ता देश हैं जिनमें भारत, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका भी शामिल हैं।

[संयुक्त राष्ट्र महासभा](#) ने 20 दिसंबर, 2018 को अंतरराष्ट्रीय समाधान समझौतों पर संयुक्त राष्ट्र संधि को अपनाया था।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने यह अधिकृत किया था कि यह कन्वेंशन 7 अगस्त, 2019 को सगिापुर में होने वाले एक समारोह तक हस्ताक्षर के लिये खुला रहेगा और इसे '[सगिापुर कन्वेंशन ऑन मडिएशन](#)' (Singapore Convention on Mediation) के रूप में जाना जाएगा।

यह संधि मध्यस्थता के परिणामस्वरूप होने वाले अंतरराष्ट्रीय समाधान समझौतों को लागू करने के लिये एक समान और कुशल तंत्र उपलब्ध कराती है।

यह अभिसमय मध्यस्थता के माध्यम से कॉर्पोरेट विवादों का त्वरित निपटान करके भारत को अपनी व्यापार साख को बढ़ावा देने में मदद करेगा।

इस अभिसमय के लागू होने के बाद भारत एवं दुनियाभर के व्यवसायों में मध्यस्थता के माध्यम से सीमा पार विवादों को हल करने में अधिक नश्चितता होगी।

कृष्णा-गोदावरी (केजी) बेसिन

Krishna-Godavari (KG) basin

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग का एक स्वायत्त संस्थान '[अघरकर रिसर्च इंस्टीट्यूट](#)' (Agharkar Research Institute- ARI) के शोधकर्त्ताओं द्वारा किये गये एक हालिया अध्ययन में यह पाया गया है कि [कृष्णा-गोदावरी \(केजी\) बेसिन](#) [Krishna-Godavari (KG) basin] में जमा [मीथेन हाइड्रेट](#) बायोजेनिक (Biogenic) मूल के हैं।

प्रमुख बढि:

यह अध्ययन DST-SERB युवा वैज्ञानिक परियोजना के एक भाग के रूप में आयोजित किया गया था जिसका शीर्षक 'एलुसिडेटिंग द कम्युनिटी स्ट्रक्चर ऑफ मॅथोजेनिक आर्चे इन मीथेन हाइड्रेट' (Elucidating The Community Structure of Methanogenic Archaea in Methane Hydrate) था।

मीथेन हाइड्रेट का निर्माण उस समय होता है जब महासागरों में उच्च दबाव एवं कम तापमान पर हाइड्रोजन-बांडेड जल एवं मीथेन गैस एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं।

मीथेन एक स्वच्छ एवं कफ़ायती ईंधन है। माना जाता है कि एक घन मीटर मीथेन हाइड्रेट में 160-180 घन मीटर मीथेन होता है।

केजी बेसनि में [मीथेन हाइड्रेट्स](#) में मौजूद मीथेन दुनिया भर में उपलब्ध जीवाश्म ईंधन भंडार का दोगुना है।

शोधकर्ताओं के अनुसार, कृष्णा-गोदावरी (केजी) बेसनि और अंडमान एवं महानदी के तट के पास बायोजेनिक मूल के मीथेन हाइड्रेट का नक्षेपण संबद्ध मथोजेनिक समूह के अध्ययन के लिये आवश्यक है।

शोधकर्ताओं के अनुसार, अभी तक मीथेन हाइड्रेट वाले तलछट से जुड़े मथिनोजेनिक (Methanogenic) समुदायों से संबंधित अत्यंत कम अन्वेषण हुए हैं।

आणविक एवं संवर्द्धन तकनीकों का उपयोग करने वाले इस अध्ययन से केजी बेसनि में अधिकतम मथिनोजेनिक विविधता का पता चला है जो अंडमान द्वीपीय तट एवं महानदी बेसनि की तुलना में यहाँ (केजी बेसनि) बायोजेनिक मीथेन के अधिक स्रोत होने की पुष्टि करता है।

इस बेसनि में जमा होने वाला मीथेन हाइड्रेट एक समृद्ध स्रोत है जो मीथेन (एक प्राकृतिक गैस) की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करेगा।

मीथेन हाइड्रेट से संबंधित इस शोध को 'मरीन जीनोमिक्स' (Marine Genomics) नामक जर्नल में प्रकाशित किया गया है।